विमर्श के अधुनातन आयाम

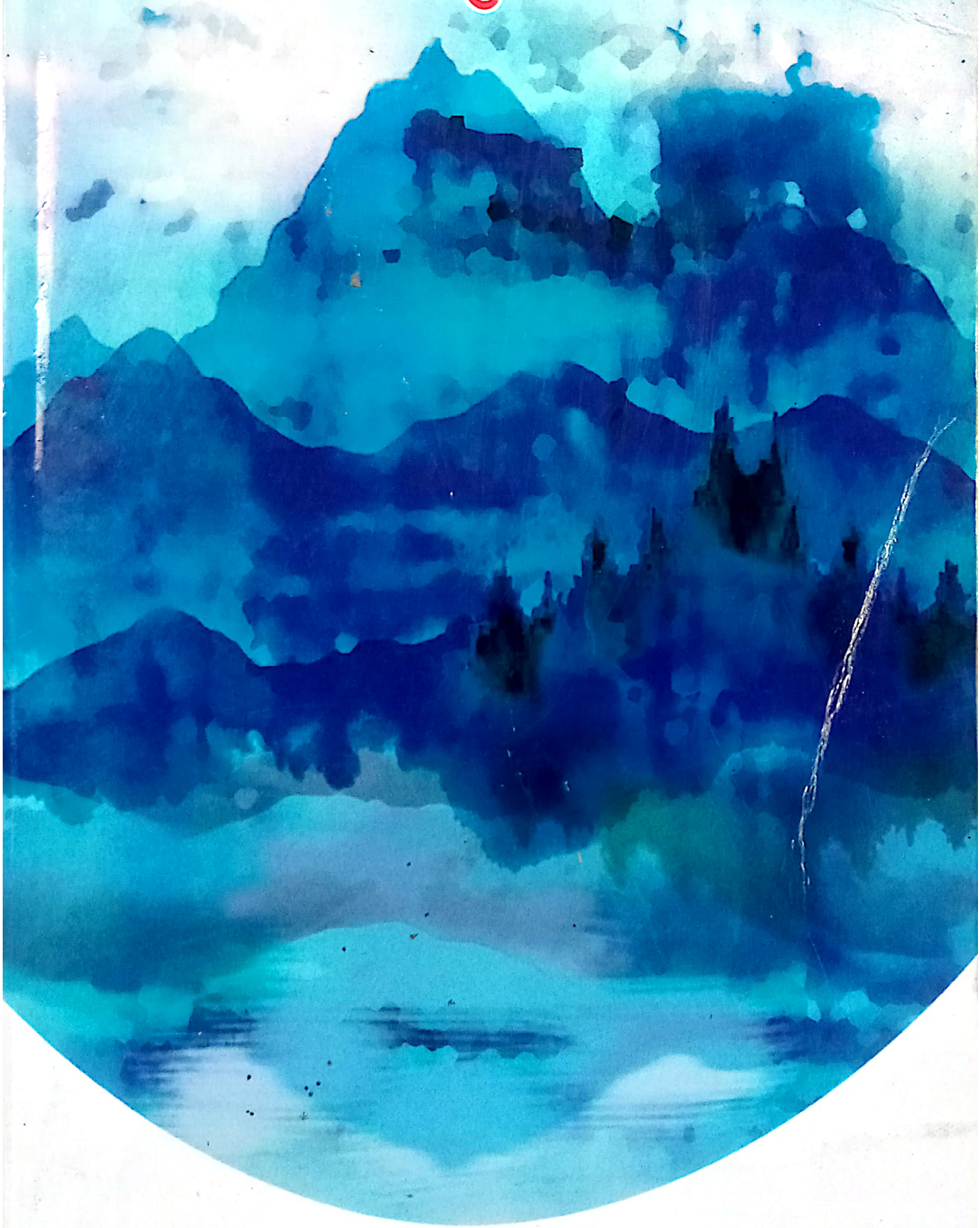

संपादक
शिराज शेख

उप-संपादक
प्रियंका चौहान

डॉ. सिराज हसन शेख

शिक्षा : एम.ए, सेट, नेट, जे. आर. एफ., पीएच.डी.

भाषा ज्ञान : मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू

प्रकाशन एवं संपादन : • हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान (2014) पुस्तक का संपादन • नेट, सेट, जे.आर.एफ. प्रतियोगिता परीक्षा पुस्तक (2016) • राष्ट्रवाणी पत्रिका के 'आदिवासी विमर्श विशेषांक' (2015) का सह संपादन • हिन्दी भाषा और साहित्य को पुणे का योगदान (2018, आर के पब्लिकेशन मुंबई) • हिंदी नेट / जेआरएफ, सेट, एम. फिल., पी-एच.डी प्रवेश परीक्षा मार्गदर्शक पुस्तक (2020, निराली प्रकाशन, पुणे) • राष्ट्र, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रसेवा (प्रकाशनाधीन)

उपलब्धियाँ : • 'संस्कृति इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी' ई-रिसर्च जर्नल के बोर्ड ऑफ स्टडीज का आजीवन सदस्य • आलोचना, समकालीन भारतीय साहित्य, वीणा, अक्षरा, हिंदुस्तानी जबान, राष्ट्रवाणी, समिति संवाद, शोध-दिशा आदि स्तरीय पत्रिकाओं में लगभग 50 शोधालेख प्रकाशित • दै लोकमत समाचारपत्र में स्वामी विवेकानंद, आ. विनोबा भावे, डॉ. पदमजा घोरपड़े, मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' आदि पर केंद्रित स्तंभालेख प्रकाशित • राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग तथा 50 शोध-निबंधों का प्रस्तुतिकरण • महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पुणे, हिंदुस्तानी प्रचार सभा मुंबई आदि संस्थाओं का आजीवन सदस्यत्व • विविध महाविद्यालयों में दो दर्जन से अधिक विविध विषयों पर व्याख्यान • स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाओं में 7 वर्ष का अध्यापन अनुभव.

संप्रति : हिंदी विभाग प्रमुख, सुशिला शंकरराव गाढ़वे महाविद्यालय, खंडाळा

मोबाईल : 09011444059 **ई-मेल :** shiraj.shaikh14@gmail.com

प्रियंका चौहान

शिक्षिका एवं शोधार्थी प्रियंका चौहान, पाटकर महाविद्यालय (मुम्बई) में सहायक प्राध्यापक होने के साथ-साथ सृजन में खास रुचि रखती हैं। आपकी रचनाएँ देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रहती हैं। आपका अधिकांश समय अध्ययन, अध्यापन एवं चिंतन में व्यतीत होता है। हिन्दी के प्रति समर्पण एवं जिज्ञासा ही आपके व्यक्तित्व की पहचान है। महिला सशक्तिकरण हेतु आपका संजीदा दृष्टिकोण ही आपको इस भीड़ से अलग पहचान देता है। **सम्पर्क** - सहायक प्राध्यापक, पाटकर महाविद्यालय, गोरेगांव, मुम्बई - 400104 **ईमेल** - priya199c@gmail.com

ISBN 978-81-904853-0-2

978-81-904853-0-2 समीक्षा

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस
दिल्ली

Rs. 175/-

विमर्श के अधुनातन आयाम

संपादक

डॉ. सिराज शेख

उप-संपादक

प्रियंका चौहान

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस

दिल्ली

ISBN : 978-81-904853-0-2

प्रथम संस्करण : 2020

© सुरक्षित

प्रकाशक :

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस

जी-86, गली नंबर 3,
शास्त्री पार्क, दिल्ली-110 053

वितरक :

आर. के. पब्लिकेशन

मरीन लाइंस, मुम्बई-400 002
फोन : 9022 521190 / 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com

मूल्य : ₹ 175/-

अक्षर संयोजन : सुरेश सिंह
आवरण : सुनील निंबरे

VIMARSH KE ADHUNATAN AAYAM edited by Siraj Shaikh, Priyanka Chauhan

विश्व के सभी शोषित नारियों,

आक्रोश व्यक्त करते किन्नरों

और

पीड़ित वृद्धों

तथा

उन रचयिताओं को

जिनके साहित्य में इनकी पीड़ा को वाणी मिली

उन्हें

सादर समर्पित....

संपादकीय

साहित्य और समाज का आंतरिक संबंध बहुत गहरा होता है। साहित्य समाज को गढ़ता है। उसमें साहस भरता है। सामाजिक अनंत संभावनाओं को संजोए रखने का महत्वपूर्ण कार्य साहित्य में व्यक्त होता है। साहित्य की अनेकों परिभाषाओं का हमने और हमारे जैसे अनेकों ने खूब अध्ययन किया है। पर क्या वाकई में हम साहित्य को समझने में कारगर सिद्ध हुए हैं, यह प्रश्न निरूत्तर कर देता है। संभावना है कि साहित्य को कई नामी गिरामी विचारकों ने समझा है। इसलिए तो वे आज अनेक ज्वलंत समस्याओं पर विचार-विनिमय करते हैं। इन्हीं विचार विमर्शों से एक आदर्श समाज की परिकल्पना की जा सकती है। मैं, आप सभी पाठकों को सोचने के लिए मजबूर कर रहा हूँ कि थोड़ा सोचिए तो की अगर आज साहित्य ना होता, तो समाज किस दिशा की ओर मुड़ता? खैर, साहित्य ने हमेशा से ही विविध विमर्शों को संजोया है। प्रस्तुत पुस्तक इसी प्रकार के विमर्शों को प्रवाहित करती है। इस पुस्तक में वर्तमान साहित्य में पनपते विमर्शों के अधुनातन आयामों को अधोरेखित किया है। अत: पुस्तक का शीर्षक 'विमर्श के अधुनातन आयाम' अपने समुन्नत रूप को प्रकट करता है।

सामाजिक समस्याओं का अन्वेषण करना साहित्य का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए और ऐसा साहित्य में होता भी है। वर्तमान काल की साहित्यिक कृतियों पर नजर डालने के पश्चात हम पाते हैं कि विविध प्रकार की समस्याओं का चित्रण साहित्य में होता है। आज कल की प्रमुख समस्या दलितों, स्त्रियों, किन्नरों, वृद्धों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और घुमंतू जनजातियों आदि की हैं। वस्तुत: इन्हीं के इर्द-गिर्द साहित्य के नवीन विमर्श घूमते रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन्हीं नवीनतम विमर्शों को केंद्र में रखा गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित लेख विविध विषयों से संबंधित है। इन लेखों को मुख्यत: दो वर्गों में विभाजित किया गया है। पहले खंड में संकलित लेख संशोधन की दृष्टि से आप्लावित है। इनमें विशिष्ट प्रकार का चिंतन प्रस्तुत हुआ है। इन लेखों में साहित्यिक विधाओं में चित्रित विमर्शों एवं

चिंतनपरक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है। अतः यह शोध परक दृष्टि पर आधारित है तथा दूसरे खंड 2 में संकलित लेख किसी विशेष साहित्यिक कृति में चित्रित विमर्श पर केंद्रित है। या यूं कहें की किताबों की चिंतनपरक समीक्षा है।

इसमें लगभग आठ लेख नारी समस्या, नारी वाद, नारी अस्मिता, नारी संवेदना और नारी की जीजिविषा से संबंधित है। वास्तव में नारी की पीड़ा आज तक सही मायने में दूर नहीं हो सकी है। विमर्शों एवं चर्चाओं का तांता साहित्य में दिखाई देता है परंतु समस्या मिटी नहीं है बल्कि आए दिन अखबारों में देखने को मिलता है कि समस्या बढ़ती जा रही है। इसी समस्या को मिटाने के लिए संवेदनशील समाज की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति एवं नवीनतम समाज निर्मिति का असाधारण प्रयास इन आठ आलेखों में देखा जा सकता है। इन लेखों में वर्तमान की साहित्यिक कृतियों में नारी समस्या का जो चित्रण हुआ है, उन्हें अधोरेखित किया हैं। नारी जीवन के विविध आयामों पर इन आलेखों में विचार प्रस्तुत हुए हैं। ये विचार आज के समय में पनपते समाज को संवेदनशील बनाने की कोशिश करते दिखाई देते हैं। भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में नारी समस्या के साथ-साथ वृद्धों और किन्नरों की समस्या भी आम बात हो गई है।

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में संकलित सामग्री मानवीयता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत हुई है। निश्चित तौर पर इन आलेखों में प्रस्तुत विचारों से हिंदी के अध्येता, सुधी विद्वतजन, अनुसंधानकर्ता लाभान्वित होंगे। यह पुस्तक एक नूतन दृष्टि लेकर साहित्य जगत में परिचित होगी, इसी आशा के साथ मैं इस पुस्तक के संयोजन के लिए आर. के. पब्लिकेशन के संचालक श्री रामकुमार जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ। इन्हीं के सद्प्रयासों से यह किताब नियत समय में प्रकाशित हो रही है।

– डॉ. सिराज शेख

अनुक्रमणिका

खंड 1

- पुनर्जागरण एवं नवजागरण : साम्य एवं वैशम्य — 11
  – अनुपम आनन्द
- नारी का स्वरूप एवं शोषण : नारी के विविध रूपों के संदर्भ में — 14
  – चित्रलेखा
- आधुनिक हिन्दी कविताओं में चित्रित मूल्यों का पतन — 18
  – मच्छिंद्र कुंभार
- सूर्यबाला की कहानियों में चित्रित एकल परिवार की समस्या — 24
  – आर. गायत्री
- समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी समाज का यथार्थ स्वरूप — 28
  – रूपाली रमेश रीता प्रजापति
- सुधा अरोड़ा के कथा–साहित्य में नारी संवेदना — 37
  – सरिता यादव
- कात्यायनी की कविता में स्त्री — 43
  – शिवशंकर यादव
- समाज, समाजीकरण और बराबरी का सपना बुनता नारीवाद — 49
  – डॉ. स्वाती ठाकुर

खंड 2

- 'युगांत' उपन्यास में स्त्री अस्मिता की खोज ('गांधारी' के विशेष संदर्भ में) – आरती प्रसाद — 55
- 'नालासोपरा : पोस्ट बॉक्स नं. 203' उपन्यास में भूमंडलीकरण – भारती यादव — 59
- 'चार दरवेश' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श – प्रा. महेश चव्हाण — 67
- स्त्री जीवन के संघर्ष की कथा : 'अभिशप्त श्यामला' – मनोजकुमार शर्मा — 72
- वैविध्य, सहजता और दृष्टि-बोध का परिचय : 'शब्दों के परे' – डॉ. मोहसिन खान — 80
- उषा प्रियम्वदा के 'नदी' उपन्यास का मूल्यांकन – डॉ. पूनम पटवा — 84
- स्त्री जीवन की दास्तान : 'कहानी कोई सुनाओ मिताशा' – डॉ. सिराज शेख — 89
- डॉ. नीरजा के 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श – सोमनाथ कोळी — 94
- 'एक भिखारिन की मौत' नाटच कृति में चित्रित स्त्री विषयक दृष्टिकोण – सुहास अंगापुरकर — 100
- बेटियों को संस्कारित करती मृदुला सिन्हा – डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल — 104

स्त्री जीवन की दास्तान : 'कहानी कोई सुनाओ मिताशा'

डॉ. सादिका नवाब सहर उन ख्यातनाम साहित्यकारों में से एक हैं–जिनका नाम उन पाठक वर्ग के पास ख्यातनाम है, जो 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'हिंदुस्तानी जबान' आदि जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं के नियमित वाचक हैं। मैं अक्सर इन पत्रिकाओं में उनकी अनूदित कहानियाँ और कविताएँ पढ़ता रहता हूँ। उनसे प्रत्यक्ष भेंट तो मेरी अब तक न हो सकी, पर उनका उपन्यास 'कहानी कोई सुनाओ मिताशा' के माध्यम से उनके विचारों से मैं सराबोर हो चुका हूँ। 'कहानी कोई सुनाओ मिताशा' एक ऐसी महत्वपूर्ण रचना है, जो समकालीन परिवेश के स्त्री जीवन की यथार्थ तस्वीर को अंकित करती है। स्वतंत्रता के बाद औपचारिक तौर पर देश तो आजाद हुआ लेकिन देश की जनता आजाद न हो सकी। कतिपय समस्याएँ देश में उभरने लगी और इन समस्याओं का हल ढूँढ़ने में सरकार नाकाम साबित हो चुकी पर साहित्यकार कभी अपनी सोच में नाकाम नहीं होता। डॉ. सादिका का यह उपन्यास भी घटते मानवीय मूल्यों की ओर संकेत करता है। इस उपन्यास को पढ़ते समय आप अनेक नैतिक पहलुओं से उजागर होंगे पर यहाँ केवल मिताशा के जीवन रूपी आलेख की ओर संकेत किया गया है। फिर भी एक बात अवश्य कहना चाहुँगा कि लेखिका के समग्र साहित्य का मूल्यांकन होना अति आवश्यक है, क्योंकि लेखिका का लेखन कौशल्य अत्यंत समृद्ध और समुन्नत है। इस उपन्यास की प्रमुख नायिका मिताशा की कहानी स्त्री जीवन की सच्ची दास्तान है।

मिताशा भारतीय परिवेश में जन्मी एक स्त्री चरित्र है। यह चरित्र उपन्यास के शुरू से अंत तक अपने आदर्श जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत करता है। वह ऐसे घर में जन्म लेती है, जहाँ उसके पिताजी उसके जन्म के बाद तीन महीने उसे देखने तक न आ सके क्योंकि लड़कियों से वे अक्सर नफरत करते थे। मिताशा बचपन में इसलिए झूठ बोलने की आदि बन चुकी थी क्योंकि झूठ बोलने से उसकी मार टल जाती थी वरना छोटी-छोटी बातों पर उसे अपने घर वालों की मार खानी पड़ती थी और अनाप-शनाप बातों को सुनना पड़ता था। धीरे-धीरे मिताशा बड़ी होने लगती है। जैसे-जैसे वह बड़ी होने लगती है, वैसे-वैसे

पुरुष सत्ता उसे अपनी हवस का शिकार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। सबसे पहले जब मिताशा हाईस्कूल में पढ़ती थी, तो किसी युवक ने चिट्ठी देकर अपने प्यार का इजहार किया। मिताशा ने डर के कारण 'यह चिट्ठी मेरी नहीं है' कहने में कोई कसर न छोड़ी। हालांकि बाइबल जैसे पवित्र ग्रंथ पर भी हाथ रखा। मिताशा इस झूठ पर पछताती रही और बाइबल पर हाथ रखकर झूठ बोलना उसे अखर रहा था पर क्या करती सच बोलने से जो बेज्जती और मार मिलने वाली है, उससे तो झूठ बोलना ही उसके लिए सरल है। इस घटना के बाद उसकी मंगनी युवराज नामक युवक से तय होती है। पुरुषों की वासनामय नजर से तंग रही मिताशा की यह मंगनी भी टूट जाती है। इसका कारण यह है कि युवराज ने अपने पिता के भय से इस विवाह को अनुमति दी थी। उसकी अपनी पसंद कोई और थी। मिताशा पढ़ना चाहती थी। कॉलेज में दाखिला करवाने हेतु मिताशा और उसके पापा कलकत्ता गए हुए थे। वहाँ उनके दोस्त मोरेश्वर काका से मुलाकात होती है। किसी कारण से पापा वहाँ से चले जाते हैं और मोरेश्वर काका मासूम मिताशा पर अत्याचार करता है। यह अत्याचार जिस मोरेश्वर काका की कोठरी में होता है, वहाँ उसकी फिरयाद सुनने वाला कोई नहीं होता है। उस समय इतनी भयानक और खौफनाक स्थिति से वह गुजरती है, जिसका अंदाजा लगाना मुश्किल बात है। मिताशा अब पुरुषों से नफरत करने लगती है। ''बचपन से पापा के मम्मी पर किए दुर्व्यवहार से मर्द जात से मुझे नफरत हो गई थी। उस पर काका के साथ ये हादसे ने मेरी मर्दों की इस जंगली दुनिया से दिलचस्पी खत्म कर दी।''[1] मंजु नामक एक सहेली के कारण मिताशा के जीवन में प्रभाकर नामक युवक आया, जो मेडिकल की पढ़ाई करता था। प्रभाकर के साथ रहना मिताशा ने पसंद न किया। भरत नामक युवक जो मिताशा के भाइयों के साथ पला-बढ़ा था वह भी मिताशा को मिलने की ख्वाहिश रखने लगा। मिताशा ने उसको अस्वीकार किया और नफरत भरे शब्दों में कहा ''मुझसे दूर रहना वरना बहुत बुरा होगा।''[2] मिताशा के पापा पियक्कड़ थे। अपनी पत्नी से वे हमेशा दुर्व्यवहार करते थे। उससे तंग आकर मिताशा के मम्मी को अपने बच्चों के साथ घर छोड़ना पड़ा। कोई सहारा न रहा। दर-ब-दर भटकते हुए वह मामा के घर कोलकाता पहुँचे। वहाँ पर भी उनका निबाह न बना। मिताशा अलीगढ़ में सूर्या काका के यहाँ भी सुरक्षित न रह सकी। अर्थात् वहाँ पर भी काका ने अपनी फैक्ट्री में उसके साथ बद्तमीजी की। अब शिकायत करे तो किससे करे? इस तरह अपने पराये सभी दुनिया के पुरुष हैवानों द्वारा मिताशा को प्रताड़ित होना पड़ता है। स्त्री जीवन की क्या यही

हकीकत है यह सवाल लेखिका के मन में शायद बार-बार उठता होगा। मिताशा की जिंदगी के कश्मकश में अनेकों युवा आते रहे और मिताशा के सौंदर्य से प्यार और मुहब्बत करते रहे कोई हैवान किस्म के थे तो कोई वाकई खरा सोना थे। समीर भी ऐसा ही युवक था, जो मिताशा को पाने की चाह रखता था। समीर के साथ मिताशा के घरवालों का अजीब-सा रिश्ता बन जाता है। सभी चाहते हैं कि मिताशा और समीर का रिश्ता बन जाए पर नियति को यह कदापि मंजूर नहीं होता है। अत: समीर के पिता स्पष्ट शब्दों में कहते हैं– ''कैरेक्टर-लेस माँ की कैरेक्टर-लेस बेटी, मेरे घर की बहू नहीं बन सकती।''[3] इस तरह मिताशा की तकदीर खाइयों से भरी नजर आती है। मिताशा के जिंदगी की दास्तान में उसके अपने नजदीकी व्यक्ति जल्द ही स्वर्ग सिधार जाते हैं, जिनमें उसके नाना, दादी आदि प्रमुख हैं। इस कारण से वह हमेशा अकेलेपन में डूबी रहती है।

मिताशा के जीवन का सफर भारत के अलग-अलग प्रदेशों में गुजरता है। महाराष्ट्र की आर्थिक राजधानी मुंबई नगरी में अपना नसीब आजमाने हेतु मिताशा आती है। वहाँ शुरू के दिनों में उसे और भाई प्रसाद को बदहाली भरे दिन गुजारने पड़ते हैं। नौकरी की तलाश में भटकना पड़ता है। जिंदगी के जटिल सफर में वह हार मानने को तैयार नहीं है। अत: डटकर उसी नगर में रहती है। आखिर उसे नौकरी मिल जाती है। मिताशा के जिंदगी की यहाँ मुंबई नगर में नवीन शुरूआत होती है। ऐसे समय में कुछ कारणों से भाई प्रसाद का ट्रांसफर हो जाता है। मिताशा को मुंबई जैसे शहर में अकेले रहना कठिन महसूस होने लगता है। ऐसे में मिताशा की भेंट प्रसाद के जरिए से सेठ गौतम शाह नामक भले आदमी से हो जाती है और यहीं से मिताशा के जिंदगी का नया दौर प्रारंभ हो जाता है। बातों ही बातों में और दर्दभरी परेशानियों में गौतम, मिताशा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। अपने से दुहरी उम्र के गौतम के साथ मिताशा शादी करने को तैयार हो जाती है। मिताशाा की तकदीर ही इस शादी के लिए उसे विवश कर देता है। मिताशा और गौतम की शादी अनोखे ढंग से हो जाती है। ऐसे समय में अपने पिछले दिनों की याद में प्रभाकर, युवराज और समीर का स्मरण मिताशा को हो जाता है। बेबस, बेसहारा और बदनसीब मिताशा के दिन पलट जाते हैं। शादी के बाद वह उल्लासित रहने लगती है। पुणे के बालगंधर्व मंदिर में अपने पति के साथ नाटक देखती है। गौतम उसे, उसके पसंद की हर चीज देता है। गौतम मन से और धन से दोनों से अमीर होता है। अत: मिताशा के जीवन में आया हुआ यह चरित्र हीरो का किरदार बखूबी

निभाता है। सन् 1983 में गौतम और मिताशा को लड़का होता है। प्यार से उसका नाम दीपू रखा जाता है। गौतम की पहली औरत के जरिए पाँच बच्चे हुए थे और दीपू को मिला के छः हो गए। ये सभी बच्चे अब मिताशा और गौतम दोनों के हो चुके थे। अपितु मिताशा को ये बच्चे अपने बच्चे लगने लगते हैं। इन सभी बच्चों का पालन-पोषण वह बड़े लाड-प्यार से करती है। अपना बच्चा दीपू को वह मार सकती है पर अन्य बच्चों को नहीं। मिताशा की नई जिंदगी के अनेक मोड़ इस उपन्यास में अंकित किए गए हैं। बच्चे जब तक छोटे थे तब तक सभी उसकी बात मानते थे। सब कारोबार उसके हाथ में था। कुछ समय बाद गौतम बीमार पड़ने लगा। उसकी मौत के बाद सारा कारोबार गौतम के बेटे अंकित की तरफ जाता है। अंकित बड़े बाप की बिगड़ी हुई औलाद होता है। अतः पैसे उड़ाता रहता है। सभी बच्चे ठीक से सेटल हो जाते हैं। इन्हें सेटल कराने में मिताशा का ही श्रम होता है पर अफसोस की बात यह कि उसका साथ कोई नहीं देता। उसे गौतम की याद बार-बार सताती है। उसके जीवन में वही एकमात्र उसका सहारा था। आज वह नहीं है पर उसकी यादें मिताशा के साथ है। मिताशा की जिंदगी की दास्तान उपन्यास के अंत तक खत्म नहीं होती है। उपन्यास के अंतिम पड़ाव पर वह अपनी जिंदगी के अतीत की ओर झांकती है। सोचने लगती है– ''मैं सोच रही थी। कब तक ये संघर्ष चलता रहेगा, साँसों के खत्म होने तक?''[4] और ऐसा ही होता है जिंदगी इतनी सरल नहीं होती और औरत के लिए तो यह कठिनाई अधिक है उसकी जिंदगी के हालात कभी खत्म नहीं होते, मिताशा के बारे में यही हुआ है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास का कथानक एक औरत के जीवन संघर्ष की सशक्त गाथा है। इस गाथा को अपनी लेखन कौशल्य से उजागर करने वाली इस विदुषी लेखिका ने अत्यंत सजगता से काम लिया है। कहानी प्रस्तुत करते समय लेखिका ने कथाक्रम को कहीं टूटने नहीं दिया है। कथाक्रम टूटने न पाए इसलिए कथाक्रम जोड़ने वाले शीर्षक दिए गए हैं। इसमें आए हुए जीवंत पात्र, कथानक आगे बढ़ाने वाले संवाद अत्यंत बेजोड़ बन पड़े हैं। इस उपन्यास में चित्रित परिवेश पूरे भारतवर्ष के प्रमुख शहरों से लिया गया है। समकालीन परिवेश की सीमा में यह आता है। उपन्यास की भाषा शैली अत्यंत बेजोड़ बनी है। इसके शीर्षक में बड़ा गहन अर्थ छिपा हुआ है। यह कहानी किसी एक मिताशा की नहीं है बल्कि भारतवर्ष में ऐसी अनेक स्त्रियाँ विद्यमान है जो अपने अंतिम साँसों तक अपने जीवन से संघर्ष का सामना करती है और इन मिताशाओं को इस देश में कब तक पुरुष सत्ता द्वारा प्रताड़ित किया जाएगा, इन पर होने

वाले अन्याय और अत्याचार कब तक चलेंगे यह बड़ा गहन प्रश्न है? इस प्रश्न की खोज में लेखिका ने मिताशा के जीवन को बखूबी वर्णित किया है। कहानी के सभी तत्वों पर अगर उपन्यास को कसा जाए तो भी उसकी परिपूर्णता में कोई कमी नहीं आ जाएगी।

डॉ. शोभनाथ यादव ने डॉ. सादिका नवाब दवारा लिखित 'पत्थरों का शहर' इस कविता संग्रह के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखा है–''डॉ. सादिका नवाब ग़ज़ल की दुनिया में अपना पुख्ता नाम बना चुकी हैं। यहाँ अब वे नज़्म और कविता के नए अंदाज और एहसास में अपनी नई पहचान लेकर आई है। आलम समेटकर इन कविताओं में उतरी है, पर उनके प्यार का यह आलम अपने निजी जीवन से निकलकर प्रकृति के सौंदर्य से गुजरता हुआ आदमी के निखालस प्यार में तब्दील हो जाता है।''[5] मैं यहाँ यह कहना चाहूँगा कि डॉ. शोभनाथ यादव जी के ये शब्द केवल उनकी कविताओं और ग़ज़लों तक सीमित नहीं है, बल्कि कथा साहित्य में लेखिका की भावना आदमीयत की कीमत को तौलने के लिए उच्चरित होती दिखाई देती है। मिताशा की कहानी इसी ओर संकेत करती है। आदमीयत, इन्सानियत, एहसास, भाव, दिलों के भेदों से गुजरता यह उपन्यास सचमुच वर्तमान कालीन परिवेश में अनोखा स्थान रखता है। अत: महाराष्ट्र में रहकर साहित्य सृजन के माध्यम से हिंदी की सेवा करने वाले साहित्यकारों में और प्रसिद्धी से कोसों दूर रहने वालें अनोखें साहित्यकारों में डॉ. सादिका नवाब सहर अव्वल हैं।

संदर्भ सूची :

1. कहानी कोई सुनाओं मिताशा, डॉ. सादिका नवाब सहर, पृ. 34
2. कहानी कोई सुनाओं मिताशा, डॉ. सादिका नवाब सहर, पृ. 37
3. कहानी कोई सुनाओं मिताशा, डॉ. सादिका नवाब सहर, पृ. 59
4. कहानी कोई सुनाओं मिताशा, डॉ. सादिका नवाब सहर, पृ. 190
5. पत्थरों का शहर, डॉ. सादिका नवाब सहर, फ्लैप पर से

– डॉ. सिराज शेख

(एम्.ए., सेट, नेट/जे.आर.एफ. पी.एचडी.)

हिंदी विभाग प्रमुख,

सुशिला शंकरराव गाढ़वे महाविद्यालय, खंडाला, सातारा (महाराष्ट्र)

E-mail : shiraj.shaikh14@gmail.com